# मिथिलेश्वर की कहानियों में सामाजिक एवं पारिवारिक संघर्ष

**डॉ. दीप्ति शर्मा**

***शोध सार***

*हमारा मानना है कि सोच समझ कर बनाये गये इस पागलपन कुंठा और ना–उम्मीद के समय में जब मानव मुक्ति के लिए संघर्ष करता है, तब उसके समक्ष बहुत से मुक्ति के बहुआयामी संघर्ष बनते हैं। सामाजिक रूढ़िवादिता, प्रगतिशीलता, तर्कसंगतत्ता, पुरूष वर्चस्व इन सभी का आपस में समन्वय रहता है।*

*'दुनियाभर में महिला आन्दोलनों को आज ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो पिछले समय की चुनौतियों से बहुत भिन्न हैं। विश्व बाजारों पर कब्जा करने के लिए पूंजीवाद के जिन शक्तिशाली रूपों को विकसित किया गया है, उसी हद तक लोगों के दिल–दिमाग पर कब्जा करने वाले रूप भी हैं। पुरूष–श्रेष्ठतावादी विचारधाराएं भिन्न–भिन्न रूप से सामने आ रही हैं। वर्तमान अन्यायपूर्ण व्यवस्था राष्ट्रों के बीच, वर्गों के बीच और स्त्री–पुरूष के बीच, असमानताओं को और बढ़ा रही है। पारिवारिक, राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर देखें तो साम्राज्यवाद संचालित वैश्वीकरण के दौर में आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ विभिन्न रूपों में धार्मिक तत्ववाद में बढ़ोत्तरी लगी रही है और महिलाएँ ही इसका सबसे आसान निशाना बनती हैं।*

**मुख्य बिन्दु–**

सामाजिक,

रूढ़िवादिता,

प्रगतिशीलता,

तर्कसंगतत्ता,

शोषण–उत्पीड़न

*बृंदा कारात कई प्रकार के संघर्षों से अवगत करवाया, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषागत संघर्ष बताये है। भारतीय नारी का संघर्ष काफी लम्बा, बहुआयामी और बहुस्तरीय है। भारत की कामगार महिलाएँ शोषण के अनेक रूपों को झेलती चली आ रही हैं। ग्रामीण एवं शहरी समाज की महिलाओं के संघर्ष को मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। महिलाओं का शोषण–उत्पीड़न किस प्रकार होता है उनसे कैसे बचा जाए इन सबके तरीके मिथिलेश्वर व बृंदा कारात ने अवगत करवाए हैं।*

*स्वयं महिलाओं के बीच असमानताएँ थीं। उदाहरण के तौर पर उनके बीच वर्ग और जाति के आधार पर श्रेणियाँ थीं। महिलाओं का एक समान समाज नहीं था। ये विवादास्पद मुद्दे थे। यह चलन जो उस समय के आन्दोलन में स्पष्ट रूप से प्रभावित था। उसने परिवार में एक महिला की स्थिति पर अवरोधक लगा रखा था, जो कि एक महिला की स्थिति को सबसे अधिक और सबसे गहरे रूप से प्रभावित करती है। महिलाओं ने एक दूसरे से संबंध बनाये, जैसे सम्बन्धों का स्वागत था यह स्वीकार्य था, जो कि वर्ग, जाति या समुदाय से सम्बन्धित किसी भी पहचान को मिटा देता था। वर्तमान समय में महिलाओं के समक्ष पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्ष है।*

## शोध प्रपत्र

भारतीय नारी विभिन्न संघर्षों से गुजरती है। मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में एक कमजोर आवाज को एक मजबूत आवाज में बदलने का प्रयास किया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कैसे सक्षम बनाए, जिसमें उसका जीवन संघर्ष रहित बन सके। मिथलेश्वर की कहानियों में सामाजिक एवं पारिवारिक संघर्ष पाया जाता है, जिसका संबंध आम जन से है। बहुत से लोगों के समक्ष संघर्ष एक चुनौती है, जिसके द्वारा इन्सान का जीवन बदल जाता है।

**"सामाजिक बुराइयाँ आज भी विद्यमान हैं, किन्तु स्त्री चेतना का माध्यम आज अखबार, टेलीविजन, रेडियो और साहित्य आदि हो गया है। पूर्वकाल में यह प्रताड़नाएँ लोकगीत बनकर सहज भाव से समग्र समाज में प्रचलित हो जाती थी। स्त्री के विवाह प्रसंग, नंद–भौजाई की खट्टी–मीठी तकरार, सास–बहू के झगड़ों के कुछ लोकगीतो की यहाँ समीक्षा की है, साथ ही ससुराल वालों की पुत्र प्राप्ति की ही। कामना के साथ पुत्री प्राप्त पर स्त्री को प्रताड़ित करने के प्रसंग का भी उल्लेख है।"**[i]

मिथिलेश्वर, विनय कुमार पाठक एवं रमेशचन्द्र शाह यह समकालीन लेखक हैं। पुरूष और स्त्री की मनोवृत्ति एवं कुत्सित वृत्ति का टीका किया है। संघर्षशील समाज हमेशा समाज को कानूनी, धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार बताता है। विचार एवं भावनाओं की आलौकिकता पाई जाती है। मिथिलेश्वर एवं विनय कुमार पाठटक की साहित्यिक विधाओं में काफी उत्कृष्टता एवं समानता है। दोनों ने ही साहित्य में संघर्ष और अंचल पर अपनी लेखनी चलाई है।

**"भारतीय ग्रामीण परिवेश में आज के दौर में भी यह कथित दलित प्रजा जीवन जीने से अभिशाप से प्रताड़ित है। और उनकी स्थिति बदत्तर है। इस सन्दर्भ में डॉ. विनय कुमार पाठक लिखते हैं– किसी भी स्थिति में इन्हें जीने के लिए मुनष्य का दर्जा ही नहीं गया है। पशुओं से बदत्तर**

**इनकी स्थिति रही है। दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि का उन्मेष इसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ है।**''[ii] निषेध, नकार और विद्रोह जो दलित साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ मानी जाती हैं, उसका बीज इसी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में छिपा हुआ है। दलित साहित्य मनुवादी व्यवस्था के विरोध में अम्बेडकरवादी दलितों की नव चिंतित निष्ठाओं का साहित्य है।

भारतीय ग्रामीण समाज में मिथिलेश्वर ने अपने साहित्य में सामाजिकता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, पारिवारिकता, प्राकृतिकता, वैचारिकता एवं वैविधता से परिचय करवाया है। मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में नवोदित एवं अंकुरित द्रष्टव्य व्यक्त किए है। जीवन की ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की समीक्षाएँ भी हैं।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में मनुष्य की मानसिक कमजोरी को व्यक्त किया है। ग्रामीण शहरी संस्कृति एवं सभ्यता का संयोजन पाया जाता है। अधिकतर मिथिलेश्वर की कहानियों में आरा, अररिया, मधुबनी, बैसाडीह, पटना मोतीहारी एवं दरभंगा इसके अतिरिक्त मिथिलांचल की संस्कृति और सभ्यता का समावेशीकरण है। अधिकतर मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण स्वरूपता वहाँ के लोग उनकी सोच उनके विचार तथा उनकी जीवन शैली उन सभी को कहानी संग्रहों में अपनी कहानियों के द्वारा मनुष्य के मनोभाव एवं मनोदशा को व्यक्त किया है। अधिकांशतः उनकी कहानियों में संघर्षों के अतिरिक्त युगबोध, यथार्थबोध एवं चेतना का समावेशीकरण है।

मिथिलेश्वर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष के कई प्रारूप में दिखलाई देता हैं, जिनमें परिवार–परिवार के बीच संघर्ष, व्यक्तिगत संघर्ष, पति–पत्नी के बीच संघर्ष, नारी की स्थिति एवं समस्या, पुरूष की स्थिति एवं समस्याएँ, युवा वर्ग के प्रति सामाजिक एवं व्यक्तिगत दृष्टिकोण, युवा वर्ग की संघर्षमयी अवधारणा, यौन विकार, यौनिक विकृतियों एवं कामत्तर समक्ष और उससे सम्बन्धित बहुत सारी मानवीय अनुभूतियाँ जिससे धीरे–धीरे

मनुष्य का चारित्रिक पतन के साथ–साथ उसकी मौलिकता भी समाप्त हो जाती है।

मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण परिवारों में अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, कुप्रथाएँ और कट्टरपंथिता अधिक है। शहरीकरण का प्रभाव ग्रामीण मूल्यों पर पड़ा है। सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं।

**"सुनयना ने आज खाना भी नहीं खाया। आखिर वह कैसे खाए, कोई पशु तो नहीं कि दो डंडे लगाकर खानेपर जुटा दिया जाए। दुर्व्यवहार और मार के बाद खाने की इच्छा रहती ही कहाँ है, पिछले दिनों भी वह कई–कई रात बिना खाए ही रह गयी है। प्रारम्भ में वह पत्र लिखकर अपने बाबा या बाबू जी को बुलाती थी। फिर अपना सारा दुःख रो–रोकर उनसे कहती थी। अपने ऊपर होने वाले अत्याचार, अनाचार और ज्यादतियों की कहानियाँ सुनाया करती थी, लेकिन इससे पहले उसके बाबा सास–ससुर को समझाते, वे उल्टे उन्हें निर्देश देना शुरू कर देते थे– 'अपनी बिटिया को समझा दीजिए...इसने तो आकर हमारा घर बिगाड़ दिया...किसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।"**[iii]

मिथिलेश्वर ने तिरिया जन्म नामक कहानी में पति और पत्नी के पारिवारिक समन्वय से परिचय करवाया है, जिसमें सुनयना मुख्य पात्र है। परन्तु बाँझपन होने के कारण सन्तानोत्पत्ति न होने के कारण उसके विचार कुंठित एवं अवसादी हो गए हैं। सुनयना का पति नपुंसक है, उसमें लैंगिक एवं यौन तृप्ति करने की क्षमता नहीं है जिस कारण से दोनों के बीच में क्लेश युक्त जीवन बन चुका है। सुनयना को वात्सल्य प्रेम न मिलने के कारण उसके जीवन में अपूर्णता है। सुनयना अपने पति व सास–ससुर से प्रताड़ित रहती है। परिस्थितिवश इधर हरिहर काका ने ठाकुरबारी जाना भी बन्द कर दिया है। हालाँकि पहले वह अक्सर ही ठाकुरबारी जाते थे। वहाँ के साधू–सन्त मुझे फूटी आँखों नहीं सुहाते। काम करने में उनकी कोई रूचि नहीं। ठाकुर जी को भोग लगाने के नाम पर दोनों जून हलवा–पूड़ी

खाते हैं और आराम से पड़े रहते हैं। उन्हें अगर कुछ आता है, तो सिर्फ बात बनाना। भोले–भाले ग्रामीणों को अपनी बातों में उलझाए रहते हैं और अपनी इन्हीं फालतू बातों को प्रवचन की संज्ञा देते हैं।

**"ऐसे कामचोर लोगों का महत्व मेरी नजर में कौड़ी का नहीं। मैंने देखा है, जिन लोगों की शादी नहीं हुई और जो काम करना नहीं चाहते, वैसे ही लोग बाल–दाढ़ी बढ़ाकर साधु हो जाते हैं। फिर आराम से किसी मठ या मंदिर में बैठकर तरह–तरह के व्यंजनों का भोग लगाते हैं। साथ ही सामाजिक दृष्टि से सम्मान के पात्र भी बने रहते हैं। मैं घोर आस्तिक हूँ। ईश्वर की सत्ता में मेरा पक्का विश्वास है, लेकिन ईश्वर के नाम पर अपना पेट पालने वाले ऐसे पाखंडी साधु कभी मेरे विश्वास पात्र नहीं बन सकते।"**[iv]

मिथिलेश्वर ने हरिहर काका नामक कहानी में समाज की विभिन्न परिस्थितियों से अवगत कराया है। मनुष्य अपने जीवन से लड़ता है, जो उसके लिए संघर्षमयी और चेतनामयी धारणा बन जाती है। आज के बदलते परिवेश में ईश्वर की सत्ता को लोग चुनौती देने लगे हैं, जो कि समाज और परिवार के लिए बहुत बड़ी त्रासदी बन सकता है। समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो हकीकत को छिपाकर नकली मुखौटा लगा कर लोगों को छलते हैं। सामाजिक मौलिकता समाप्त हो रही है। हरिहर काका इस कहानी के मुख्य पात्र हैं, जिसकी समपत्ति को ठाकुरबारी के लोग बिना श्रम किए हुए हड़पना चाहते हैं। समाज में ऐसा बहुत बड़ा वर्ग है जो बिना श्रम किए हुए दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहता है।

मिथिलेश्वर ने सायास नामक कहानी में पारिवारिक स्थिति से अवगत करवाया है कहानीकार के विचारों में बहुत से लोग अपने जीवन को स्वयं समस्यात्मक बनाते हैं।

**असल में उनके उस दूर के साले की स्थिति बहुत दयनीय थी। उसके जिम्मे खेत का एक निहायत छोटा टुकड़ा बचा था, जिससे उन दोनों**

**प्राणियों (पति–पत्नी) का पेट भर पाना असम्भव था। उस पर छह–छह बेटों की अनियंत्रित फौज। वह खेती के अतिरिक्त बकरियों और मुर्गियों की तिजारत कर किसी तरह अपने दिन गुजार रहा था। इस स्थिति में अपने सम्पन्न बहनोई द्वारा अपने छोटे बेटे को गोद लिए जाने ने उसे अपने लॉटरी खुलने जैसे सुखद आश्चर्य से भर दिया। बहनोई की मृत्यु के बाद बेटा जब उस अफरात सम्पत्ति का स्वामी होगा तो अपने माँ–बाप एवं भाइयों की खोज–खबर अवश्य लेगा। सम्भव है, उसके चलते ही पूरे परिवार का भाग्योदय हो जाए।**

सायास कहानी में पारिवारिक रिश्तों के महत्व को बताया है। वर्तमान समय में भौतिकवादी जीवन अधिक होने के कारण रिश्तों के बीच तनाव और दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। रिश्ते अधिकांशतः दूषित हो चुके हैं उनका वास्तविक स्वरूप बदल चुका है। इस कहानी का मुख्य आशय यह है कि एक साधन सम्पन्नता व्यक्ति अपने जीवन से उक्ता जाता है, क्योंकि उसके सात बेटियाँ हैं और बेटे का अभाव है और वही दूसरी तरफ छह–छह बेटों का परिवार पर साधन सम्पन्न नहीं है। इस कहानी में दो कथानक हैं, जो अलग–अलग अवधारणाओं से जुड़े हुए हैं। एक परिवार बेटा प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा है, दूसरे परिवार में आर्थिक संघर्ष है। जहाँ खाने वालों की संख्या अधिक है, जबकि खाने के दाने नहीं हैं। सायास कहानी में गोद लिए हुए पुत्र को बहकाने और उससे परिवार का भेदभाव भी मिथिलेश्वर ने बताया है। किस प्रकार अपनी स्वयं की संतान की जगह कोई भी दत्तक संतान नहीं ले सकती है।

मिथिलेश्वर की कहानी शिष्टाचार की समझ में उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से पारिवारिक व्यवस्थाओं की गतिविधियों का मूल्यांकन किया है किस प्रकार से किसी के घर में जाना चाहिए या रहना चाहिए। परिवारों में एक निश्चित सीमा और सरोकार होते हैं, जिससे परिवारों की गरिमा बनी रहे।

**"दोस्त के दिल्ली जाने के तीसरे दिन बाद! करीब ग्याहर बजे दिन में बाथरूम में नहाने जा रहा था। मैं नहीं जानता था कि नीलू पहले से ही बाथरूम में है। बाथरूम के दरवाजे तक पहुँचते ही जैसे मुझे काठ मार गया। बाथरूम का दरवाजा खुला था। यह नीलू की भूल थी। उसे बाथरूम का दरवाजा बन्द करके नहाना चाहिए था। बिलकुल नंगी ही थी नीलू। उसके लम्बे–लम्बे, भीगे बाल पीठ पर बिखरे थे। समूचा बदन पानी से भीगा था। मुझे देखते ही उससे अपना चेहरा घूटों की गिरफ्त में ले लिया था। फिर सिर थोड़ा सा उठाकर, धीरे से कहा था, "जल्दी चले जाइए नहीं तो माँ देख लेगी।"[v]**

मिथिलेश्वर ने शिष्टाचार की समझ नामक कहानी में जीवन मूल्य का महत्व एवं चारित्रिक संघर्ष पर साहित्यकार ने जद्दो–जहद को देखते हुए स्पष्ट किया है। समाज में ऐसे बहुत से पात्र हैं, जो दिखते हैं। शिष्ट पर उनकी गतिविधियाँ अशिष्ट होती हैं, जिस कारण से कभी–कभी मानसिक मनोविकार दिखलाई पड़ता है। दरवाजा बन्द होना या खुलना अज्ञान बोधता का प्रतीक है परन्तु किसी लड़की को नग्न बदन देखना कामुकता या अशिष्टता मानी जाती है, जो शिष्ट पुरूष को शोभा नहीं देता है।

भृगुनाथ चाचा मेरे परिवार के नहीं थे और न ही निकट के सम्बन्धी ही। वे मेरे गाँव के थे इसी नाते चाचा लगते थे। आज भी गाँव में उम्र के अनुसार मैं किसी को भइया, किसी को बाबा, किसी को चाचा, किसी को बबुआ, किसी को बचवा कहता ही हूँ। लेकिन भृगुनाथ चाचा साथ मात्र इस ग्रामीण सम्बोधन का ही सम्बन्ध नहीं था। वे मुझसो और मेरे परिवार से इतने घनिष्ठ हो गये थे कि एक दूसरे के सुख–दुःख की प्रतीति हमें अपनों की तरह होने लगी थी। हालांकि माँ बताती है कि मेरे जन्म से पहले भृगुनाथ चाचा के परिवार से मेरे परिवार की कोई खास आत्मीयता नहीं थी। वैसे भी उनका घर गाँव के उस छोर पर है तो हमारा इस छोर पर लेकिन मेरे बचपन की एक शरारत और भृगुनाथ चाचा की मानवता ने दोनों घरों को एक दूसरे की करीब ला दिया।

मिथिलेश्वर ने कितने भृगुनाथ नामक कहानी में परिवार की गहनता, श्रेष्ठता और पवित्रता का आपस में समन्वय किया। इस कहानी का यह भी आशय है कि भृगुनाथ जैसे पात्र परिवारों के लिए बड़े महत्वपूर्ण होते हैं, इनमें आत्मीयता त्याग, दूसरों की मदद करना, एक अच्छे चरित्र की पहचान है, जिसमें जीवन के मूल्य होते हैं। इसके अलावा भृगुनाथ जैसे पात्रों को कई प्रकार के संघर्ष भी आसामाजिक अपने ऊपर ले लेते हैं। रिश्ते व आत्मीयता बनी रहे और मानवता जीवित रहे।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में संघर्ष चेतना और सामाजिक संघर्ष को अतिरेक किया, जिसमें रिश्ते और सम्बन्धों की विशेष पहचान है, संस्कृति और सभ्यता का भी समन्वय है। विचार भावना संवेदना का समन्वय है। लेखक ने विभिन्न कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्ष को बताया है जो मानव जीवन का यथार्थ है।

## संदर्भ सूची

[i] राव नारायण सिंह शं. 'समकालीन हिन्दी समीक्षा और डॉ. विनय कुमार पाठक', आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 113

[ii] वही पृष्ठ संख्या 63

[iii] मिथिलेश्वर 'तिरिया जन्म संकलन की कहानियाँ' प्रकाशक इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 17

[iv] मिथिलेश्वर 'हरिहर काका संकलन की कहानियाँ' इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 105–106

[v] मिथिलेश्वर 'शिष्टाचार की समझ हरिहर काका संकलन की कहानियाँ' इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 155

Contributors Details:

डॉ. दीप्ति शर्मा